No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

16091

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2019

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) संसार के समस्त अभावों को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा । परंतु कैसी विडंबना ! लक्ष्मी के लालों को भ्रू-भंग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या ! — एक काल्पनिक प्रशंसनीय जीवन, जो दूसरों की दया में अपना अस्तित्व रखता है ! संचित हृदय कोश के अमूल्य रत्नों की उदारता और दारिद्र्य का व्यंग्यात्मक कठोर अट्टहास, दोनों की विषमता की कौन-सी व्यवस्था होगी ।

(ख) हर-एक के पास एक-न-एक वजह होती है । इसने इसलिए कहा था । उसने उसलिए कहा था । मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी क्या यही हैसियत है इस घर में कि जो सब जिस वजह से जो भी कह दे मैं चुपचाप सुन लिया करूँ ? हर वक्त की धतकार, हर वक्त की कोंच, बस यही कमाई है यहाँ मेरी इतने सालों की ?

(ग) आज मेरा विज्ञान सब मिथ्या ही सिद्ध हुआ ।
सहसा एक व्यक्ति
ऐसा आया जो सारे
नक्षत्रों की गति से भी ज़्यादा शक्तिशाली था ।
उसने रणभूमि में
विषादग्रस्त अर्जुन से कहा —
"मैं हूँ परात्पर ।
जो कहता हूँ करो
सत्य जीतेगा
मुझसे लो सत्य, मत डरो ।"

(घ) जीना भी एक कला है । लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है । जियो तो प्राण ढाल दो ज़िन्दगी में, मन ढाल दो जीवनरस के उपकरणों में ! ठीक है । लेकिन क्यों ? क्या जीने के लिए जीना ही बड़ी बात है ? सारा संसार अपने मतलब के लिए ही तो जी रहा है । याज्ञवल्क्य बहुत बड़े ब्रह्मवादी ऋषि थे । उन्होंने अपनी पत्नी को विचित्र भाव से समझाने की कोशिश की कि सब कुछ स्वार्थ के लिए है ।

(ङ) मैंने उनसे सहृदय व्यक्ति कम देखे हैं । यदि यह वृद्ध यहाँ न होकर हमारे बीच में होता, तो कैसे होता, यह प्रश्न भी मेरे मन में अनेक बार उठ चुका है, पर जीवन के अध्ययन ने मुझे बता दिया है कि इन दोनों समाजों का अंतर मिटा सकना सहज नहीं । उनका बाह्य जीवन दीन है और हमारा अंतर्जीवन रिक्त ।

2. 'अंधेर नगरी' की प्रासंगिकता पर एक निबंध लिखिए । *16*

3. 'आधे-अधूरे' की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए । *16*

4. 'अंधायुग' के नाट्य शिल्प का विवेचन कीजिए । *16*

5. असंगत नाटक की विशेषताओं के संदर्भ में 'ताँबे के कोड़े' का मूल्यांकन कीजिए । *16*

6. 'कुटज' की अंतर्वस्तु पर विचार करते हुए उसकी भाषा-शैली की पड़ताल कीजिए । *16*

7. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' की संरचनात्मक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । *16*

8. 'वसंत का अग्रदूत' कविता के भावबोध पर प्रकाश डालिए । *16*

9. रिपोर्ताज विधा के आधार पर 'अदम्य जीवन' का विश्लेषण कीजिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) 'लोभ और प्रीति' का प्रतिपाद्य

(ख) 'औरत' की रंग प्रस्तुति

(ग) 'कलम का सिपाही'

(घ) 'अंधायुग' का राजनीतिक संदर्भ

———